SCAN QR FOR MORE

Volume II Issue I
www.kisangazette.in

# (A No. 154) सरसों की खेती: उन्नत उत्पादन तकनीक, कीट-रोग प्रबंधन एवं आर्थिक लाभ

**नीतू चौधरी**

*राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर (मध्य प्रदेश), भारत*

Email : neetuchoudhary871999@gmail.com

## सार

भारत में सरसों का तेल लगभग प्रत्येक घर में प्रमुख खाद्य तेल के रूप में उपयोग किया जाता है। सरसों की खेती की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसे सिंचित एवं असिंचित, दोनों प्रकार की भूमि में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। सोयाबीन और पाम के बाद सरसों विश्व की तीसरी सबसे महत्वपूर्ण तिलहनी फसल मानी जाती है। सरसों का उपयोग केवल तेल उत्पादन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसके हरे पत्तों का उपयोग सब्जी के रूप में किया जाता है तथा सरसों की खली एक उत्तम पशु आहार है, जो विशेष रूप से दुधारू पशुओं के लिए लाभकारी होती है। घरेलू बाजार के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी सरसों की मांग में निरंतर वृद्धि हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप किसानों को हाल के वर्षों में सरसों का अच्छा मूल्य प्राप्त हुआ है। साथ ही केंद्र सरकार द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) में भी वृद्धि की गई है, जिससे किसानों का आर्थिक लाभ और अधिक बढ़ा है।

हमारे भारत में सरसों की खेती मुख्यतः **शरद ऋतु (रबी मौसम)** में की जाती है। अच्छे उत्पादन के लिए 18 से 25 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त माना जाता है। सरसों की फसल में फूल आने की अवस्था में यदि अधिक वर्षा, अधिक आर्द्रता तथा बादल छाए रहें तो यह स्थिति फसल के लिए हानिकारक होती है। ऐसे मौसम में माहू/चेपा कीट का प्रकोप अधिक हो जाता है।

सरसों रबी की प्रमुख तिलहनी फसलों में से एक है तथा सीमित सिंचाई की स्थिति में भी यह एक लाभकारी फसल सिद्ध होती है। उन्नत कृषि विधियों को अपनाकर सरसों के उत्पादन एवं उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि की जा सकती है।

भारत के राजस्थान, पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में सरसों की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। राजस्थान में विशेष रूप से भरतपुर, सवाई माधोपुर, अलवर, करौली, कोटा, जयपुर एवं धौलपुर जिलों में सरसों की खेती प्रमुखता से की जाती है। सरसों के बीजों में तेल की मात्रा सामान्यतः **30 से 48 प्रतिशत** तक पाई जाती है।

## सरसों के प्रकार

भारत में मुख्यतः सरसों की दो प्रमुख किस्में पाई जाती हैं— **काली सरसों** और **पीली सरसों**। किसान अपनी मिट्टी एवं जलवायु परिस्थितियों के अनुसार इनका चयन कर बुवाई करते हैं। सामान्यतः किसान काली एवं भूरी सरसों की खेती को अधिक प्राथमिकता देते हैं, क्योंकि इनकी पैदावार अपेक्षाकृत अधिक होती है।

### 1. काली सरसों (Black Mustard)

काली सरसों के बीज गोल, कठोर एवं पीली सरसों की तुलना में आकार में बड़े होते हैं। इसका रंग गहरे भूरे से लेकर काले तक होता है। इस सरसों का उपयोग मुख्यतः तेल उत्पादन के लिए किया जाता है। पेराई के बाद इसमें अधिक मात्रा में खली प्राप्त होती है, जो पशुओं के लिए पौष्टिक आहार है। काली सरसों की पैदावार अधिक होने के कारण किसान इसे मंडी में सीधे बेचकर अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

## 2. पीली सरसों (Yellow Mustard)

पीली सरसों को सामान्यतः राई भी कहा जाता है। इसके दाने काली सरसों की तुलना में छोटे होते हैं तथा स्वाद में भी कुछ अंतर पाया जाता है। जहाँ काली सरसों का तेल भोजन में उपयोग होता है, वहीं पीली सरसों के दानों का प्रयोग अचार एवं तड़के में किया जाता है। पोषक तत्वों की दृष्टि से दोनों प्रकार की सरसों लगभग समान होती हैं।

### भूमि की तैयारी

सरसों की खेती के लिए भुरभुरी एवं अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी की आवश्यकता होती है। खेत की तैयारी के लिए सर्वप्रथम मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करनी चाहिए। इसके पश्चात 2–3 बार देशी हल या कल्टीवेटर से जुताई करें। अंत में पाटा लगाकर खेत को समतल करना आवश्यक है, जिससे नमी बनी रहती है तथा सिंचाई में जल एवं समय की बचत होती है।

### जलवायु एवं उपयुक्त तापमान

सरसों भारत की प्रमुख रबी फसलों में से एक है। इसकी बुवाई का उपयुक्त समय **मध्य सितंबर से मध्य अक्टूबर** तक माना जाता है। सरसों की खेती के लिए ठंडी एवं शुष्क जलवायु सर्वोत्तम होती है। फसल की उचित वृद्धि के लिए तापमान 15 से 25 डिग्री सेल्सियस के मध्य होना चाहिए।

बलुई दोमट मिट्टी सरसों के लिए उपयुक्त मानी जाती है, किंतु भूमि लवणीय या बंजर नहीं होनी चाहिए।

### सरसों की उन्नत किस्में

अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु उन्नत किस्मों का चयन आवश्यक है। सिंचित एवं असिंचित क्षेत्रों के लिए अलग-अलग किस्में उपलब्ध हैं।

### प्रमुख किस्में:

1. **RH-30** – सिंचित एवं असिंचित दोनों परिस्थितियों के लिए उपयुक्त
2. **टी-59 (वरुणा)** – असिंचित क्षेत्रों में 15–18 क्विंटल/हेक्टेयर उपज
3. **पूसा बोल्ड (आशीर्वाद)** – देर से बुवाई हेतु उपयुक्त
4. **NRC HB-101** – सिंचित क्षेत्रों में 20–22 क्विंटल/हेक्टेयर
5. **NRC DR-2** – 22–26 क्विंटल/हेक्टेयर
6. **RH-749** – 24–26 क्विंटल/हेक्टेयर

### सिंचाई प्रबंधन

कृषि विज्ञान की मासिक पत्रिका

समय पर एवं उचित मात्रा में सिंचाई करने से पौधों की वृद्धि एवं पोषक तत्वों का समुचित विकास होता है। सरसों की खेती में आवश्यकता अनुसार विभिन्न तकनीकों-जैसे पारंपरिक, ड्रिप एवं सब-सर्फेस सिंचाई-का प्रयोग किया जा सकता है।

### खाद एवं उर्वरक प्रबंधन

सिंचित खेतों में 6–12 टन सड़ी गोबर की खाद, 160–170 किग्रा यूरिया, 250 किग्रा सिंगल सुपर फॉस्फेट, 50 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश एवं 200 किग्रा जिप्सम प्रयोग करना चाहिए। असिंचित क्षेत्रों में उर्वरकों की मात्रा कम रखी जाती है।

### प्रमुख कीट एवं उनका नियंत्रण

आरा मक्खी, चित्रित बग, बालदार सूंडी, माहू, पत्ती सुरंगक कीट, पेंटेड बग, मोयला एवं दीमक सरसों के प्रमुख कीट हैं। इनके नियंत्रण हेतु बीज उपचार, समय पर बुवाई तथा अनुशंसित कीटनाशकों का प्रयोग करना चाहिए।

### प्रमुख रोग एवं रोकथाम

सफेद रोली, छाछ्या एवं तुलासिता सरसों के प्रमुख रोग हैं। इनकी रोकथाम के लिए बीजोपचार एवं फफूंदनाशकों का अनुशंसित मात्रा में प्रयोग आवश्यक है।

### कटाई, भंडारण एवं उपज

जब लगभग 75% फलियाँ सुनहरे रंग की हो जाएँ, तब फसल की कटाई कर बीज अलग कर लेने चाहिए। बीजों को अच्छी तरह सुखाकर ही भंडारण करना चाहिए।
असिंचित क्षेत्रों में 20–25 क्विंटल तथा सिंचित क्षेत्रों में 25–30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।

कृषि विज्ञान की मासिक पत्रिका
किसान गज़ट